ब्राह्मण

'ब्रह्मन्' शब्द से 'अण्' तद्धित प्रत्यय करने पर ब्राह्मण शब्द बनता है। इसका अर्थ होता है 'ब्राह्मणोऽयमिति ब्राह्मण'; अर्थात् जो ब्रह्म (वेद) से सम्बद्ध है वह ब्राह्मण कहलाता है। ब्राह्मण शब्द में आये 'ब्रह्म' शब्द से यहाँ मन्त्र और यज्ञ ये दोनों ही अर्थ गृहीत हैं। वस्तुतः ब्राह्मण ग्रन्थ वह आर्ष रचना है जिसे हम वेदों का भाष्य अथवा वेदमंत्रों की व्याख्या कह सकते हैं।

विद्वानों की मान्यता है कि वैदिकमंत्रों की कर्मकाण्डपरक व्याख्या को ब्राह्मण कहते हैं। संहिताओं की विभिन्न शाखाओं की व्याख्या करने के लिए पृथक्-पृथक् ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गए हैं। ब्राह्मणों की अन्तरंग परीक्षा करने पर यह स्पष्ट है कि ब्राह्मण ग्रन्थ यज्ञों की वैज्ञानिक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक मीमांसा प्रस्तुत करनेवाला महनीय विश्वकोश है। ~~ब्राह्मणं नाम~~ भट्ट भास्कर ने कर्मकाण्ड तथा मंत्रों के व्याख्यान ग्रन्थों को ब्राह्मण कहा है—'ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यानग्रन्थः'। संसार के किसी भी धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण जैसे ग्रन्थों का नितान्त अभाव है जिसमें कर्मकाण्ड का विशेषकर यज्ञ यागादि के विधान का इतना साँगोपाङ्ग तथा पूर्ण परिचय दिया गया हो।

निरुक्त आदि ग्रन्थों में 'इति विज्ञायते' कहकर ब्राह्मण ग्रन्थों का ही निर्देश किया गया है। ऐसा

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

आचार्य बलदेव उपाध्यायजी का मन्तव्य है। 'इति विज्ञायते' इस शब्द की व्याख्या में दुर्गाचार्य ने लिखा है- एवं ब्राह्मणेऽपि विचार्यमाणे ज्ञायते'।

ब्राह्मणों के प्रतिपाद्य विषयों में इन दश वस्तुओं का निर्देश इस संग्रह श्लोक में किया गया है -

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारणकल्पना।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य तु॥

प्रमुखता तो 'विधि' को ही प्राप्त है, अन्य विषय तदङ्ग तथा तन्निर्वाहक होने से गौण ही हैं।

वाचस्पति मिश्र ने ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रयोजन निर्वचन, मंत्रों का विनियोग, अर्थवाद और ~~विध~~ विधि माना है।*

कतिपय प्रमुख बिन्दुओं का सविस्तर उल्लेख किया जा रहा है -

<u>विधि</u> → ब्राह्मणों के विधि भाग में यज्ञ तथा उसके अंगों-उपांगों तथा उनसे सम्बद्ध कार्य-कलाप के लिए नियम दिए गए हैं।

<u>विनियोग</u> → इसके अन्तर्गत यह बतलाया जाता है कि किस-किस यज्ञ में किन-किन मन्त्रों का प्रयोग किया जाना चाहिये। विनियोग, ब्राह्मणों का बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंग है जिसके अभाव में मन्त्रों के उपयोग को समझना ही कठिन है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार, ब्राह्मण-ग्रन्थों में मन्त्रों के विनियोग का प्रथम अवतार होता है। किस मन्त्र का प्रयोग किस उद्देश्य की सिद्धि के लिये किया जाता है - इसकी सयुक्तिक व्यवस्था ब्राह्मणों में सर्वत्र उपलब्ध होती है। मन्त्र के अन्तरंग अर्थ से अपरिचित पाठक मन्त्र के विनियोग को अप्रमाणिक

---

* नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते॥

Scanned with CamScanner

तथा कल्पना - प्रसूत मानने का दुःसाहस कर बैठता है, परन्तु वस्तुस्थिति कुछ दूसरी बात की ओर संकेत करती है। ब्राह्मण ग्रन्थों ने मन्त्रों के पदों से ही विनियोग की युक्तिमत्ता सिद्ध की है।

हेतु → हेतु से अभिप्राय उन कारणों के निर्देश से है जिसे कर्मकाण्ड की विशेष विधि के लिए उपयुक्त बतलाया गया है।

अर्थवाद → ब्राह्मणग्रन्थों के इस भाग के अन्तर्गत यज्ञों का महत्त्व तथा उससे सम्बद्ध उपाख्यान दिये गये हैं। अर्थवाद भाग में प्ररोचनात्मक विषय वर्णित है। यज्ञ - विधियों को समझने के लिए अर्थवाद की आवश्यकता है। मीमांसाकार महर्षि जैमिनि ने अर्थवाद के प्रधान तीन भेद किये हैं - गुणवाद, अनुवाद और भूतार्थानुवाद। अर्थवाद को परिभाषित करते हुए कहा गया है -

"विहितकार्ये प्ररोचना निषिद्धकार्ये निवर्तना अर्थवादः"

अर्थात् विधि का अनुकरण और निषेध की निन्दा करने वाले वाक्यों को अर्थवाद कहा जाता है।

निरुक्ति → ब्राह्मण ग्रन्थों में शब्दों के निर्वचन का भी स्थान - स्थान पर निर्देश किया गया है। यह निर्देश इतना मार्मिक और वैज्ञानिक है कि इनका भाषाशास्त्र की दृष्टि से बहुत ही अधिक महत्त्व है। निरुक्त में जो शब्दों की व्युत्पत्तियाँ दी गई हैं, उनका मूल इन्हीं ब्राह्मण ग्रन्थों में उपलब्ध होता है।

आख्यान → किसी यज्ञ के प्रचलन में क्या उद्देश्य है अथवा किसी यज्ञ की क्या विधि है - इन विषयों को स्पष्ट करने के लिए ब्राह्मण - ग्रन्थों में छोटे - बड़े अनेक आख्यान भी मिलते हैं। ये विधि के स्वरूप को हृदयङ्गम तथा विषय को सरस एवं रोचक बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

हैं। इन आख्यानों में कभी-कभी बड़ी गम्भीर तात्त्विक बातों का भी संकेत मिलता है जो ब्राह्मणों के कर्मकाण्डात्मक वर्णन से नितान्त पृथक् होता है तथा गूढ़ गंभीरार्थ प्रतिपादक होता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों की एक बड़ी विशेषता यह है कि ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दू जाति के सामाजिक, धार्मिक और नैतिक जीवन के विकास की परम्परा का पता लगाने के लिये उनमें अनुसंधानोपयोगी पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री बिखरी हुई है। ब्राह्मण साहित्य में भारतीय पुरातन संस्कृति का सुसंहत स्वरूप मिलता है। उस युग में मानव को अतिशय उदात्त बनानेवाली समग्र भावनाओं का एकीकरण हो चुका था, जिससे राष्ट्र की दृढ़ता और एकता की प्रतीति हो सकती थी। यह संस्कृति कर्मण्यता, विज्ञान और दर्शन पर आधारित थी। इसमें आधिभौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों का समन्वय था।

प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण मिलते हैं। ये ब्राह्मण यज्ञ के प्रव्यापन के साथ-साथ रोचक आख्यायिकाओं से मानवीय मूल्यों एवं कर्त्तव्यों का शिक्षण करते हैं। 40 अध्याय, 8 पञ्चिका और 285 कण्डिकाओं में विभक्त ऐतरेय ब्राह्मण होतृगण से सम्बद्ध शस्त्रशंसना-दि कार्यों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है। इस ब्राह्मण ग्रन्थ का शुनःशेप आख्यान अत्यन्त प्रसिद्ध है। 30 अध्यायों एवं 226 खण्डों में विभक्त ऋग्वेद का दूसरा शांखायन ब्राह्मण लम्बे-लम्बे गद्यात्मक वाक्यों में अपने प्रतिपाद्यों का निरूपण करता है। इस ब्राह्मण को 'कौषीतकि' ब्राह्मण भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें अनेक आचार्यों के मतों का उल्लेख करके कौषीतकि मत यथार्थ ठहराया गया है।

शुक्ल यजुर्वेद के दो ब्राह्मण उपलब्ध हैं— शतपथ ब्राह्मण और मैत्रेयी ब्राह्मण। समस्त ब्राह्मण ग्रन्थों

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, विपुलकाय, यज्ञानुष्ठान का सर्वोत्तम प्रतिपादक शुक्लयजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण है। यह ब्राह्मण शुक्लयजुर्वेद की काण्व तथा माध्यन्दिन दोनों शाखाओं में उपलब्ध है। विषय की एकता होने पर भी उसके वर्णनक्रम तथा अध्यायों की संख्या में अन्तर पड़ता है। माध्यन्दिनीय शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण तथा 7,624 ~~कण्ड~~ कण्डिकाएं हैं। काण्व शाखा के शतपथ 17 काण्ड, 104 अध्याय, 435 ब्राह्मण तथा 6,806 कण्डिकाएं हैं। शतपथ-ब्राह्मण में यज्ञों के नाना रूपों तथा विविध अनुष्ठानों का जिस असाधारण परिपूर्णता के साथ निरूपण है, वह अन्य ब्राह्मणों में नहीं है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी यज्ञों के स्वरूपनिरूपण का श्रेय इस ब्राह्मण को प्राप्त है।

कृष्णयजुर्वेद की दो शाखाएं हैं। (i) काठक और (ii) मैत्रायणी। इन शाखाओं संहिताधिष्ठित गद्य भाग ही ब्राह्मण-रूप से स्वीकृत है। कृष्णयजुर्वेद के दोनों ब्राह्मण अपनी-अपनी शाखाओं के नाम से ही अभिहित होती है— (i) काठकीय ब्राह्मण जिसे तैत्तिरीय ब्राह्मण भी कहते हैं और (ii) मैत्रायणी ब्राह्मण जिसे अध्वर्यु-ब्राह्मण भी कहते हैं।

तैत्तिरीय ब्राह्मण का विभाग तीन भाग या काण्डों में हुआ है। इसी को अष्टक भी कहते हैं। प्रथम दो काण्डों में आठ-आठ अध्याय अथवा प्रपाठक हैं। तृतीय काण्ड में बारह अध्याय या प्रपाठक हैं। भट्टभास्कर ने इन्हें प्रश्न भी कहा है। इसका एक अवान्तर विभाजन अनुवाकों का भी है जिनकी संख्या 353 है। इस ब्राह्मण में अध्वर्युकर्तृक सम्पूर्ण क्रियाकलापों का वर्णन विस्तार से हुआ है।

सामवेद के नौ ब्राह्मणों का उल्लेख प्राप्त है। ये हैं— ताण्ड्य ब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण, सामविधान ब्राह्मण, आर्षेय ब्राह्मण, दैवत ब्राह्मण, उपनिषद् ब्राह्मण, संहितोपनिषद् ब्राह्मण, वंश ब्राह्मण

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

और जैमिनीय ब्राह्मण।

सामवेद का प्रधान ब्राह्मण ताण्डि शाखा से सम्बद्ध होने के कारण 'ताण्ड्य', पच्चीश अध्यायों में विभक्त होने के कारण पंचविंश तथा विशालकाय होने से महाब्राह्मण के नाम से ख्यात है। षड्विंश ब्राह्मण पाँच प्रपाठकों में विभक्त है और प्रत्येक प्रपाठक में अनेक अवान्तर खण्ड हैं। इसे पंचविंश ब्राह्मण का परिशिष्ट भाग भी माना जाता है। इसके पंचम प्रपाठक को अद्भुत ब्राह्मण कहते हैं। तात्कालीन धार्मिक धारणाओं का विशेष संकेत इस ब्राह्मण ग्रन्थ में है। सामविधान ब्राह्मण का अपना विशिष्ट महत्त्व है। इसमें आधिभौतिक उपद्रवों की शांति के उपाय बताये गए हैं। आर्षेय ब्राह्मण तीन प्रपाठक तथा 82 खण्डों में विभक्त है। इस ब्राह्मण में साम के उद्भावक ऋषियों का नाम तथा संकेत दिया गया है। साम गायन के वैज्ञानिक अनुशीलन के निमित्त यह ब्राह्मण नितान्त उपादेय है। दैवत ब्राह्मण सामवेदीय ब्राह्मणों में बहुत ही छोटा है। इसका तृतीय खण्ड भाषाशास्त्र की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वशाली है। उपनिषद् ब्राह्मण 10 प्रपाठकों में विभक्त है। संहितोपनिषद् ब्राह्मण में वेदाध्ययन की रीति बतलाई गई है। पाँच खण्डों में विभक्त यह ग्रन्थ सामसंहिता का रहस्य बतलाता है। वंशब्राह्मण सामवेद की अध्ययन परम्परा को बतलाता है। इसमें सामवेद के आचार्यों की वंश परम्परा दी गई है। जैमिनीय ब्राह्मण सम्पूर्ण रूप में उपलब्ध नहीं होता है।

अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ~~गोपथ~~ ग्रन्थ उपलब्ध होता है जिसका नाम है - गोपथ ब्राह्मण। इसकी प्रसिद्धि इसके प्रवचनकर्ता आचार्य ऋषि ~~गौतम~~ गोपथ के आधार पर हुई। इसका कारण है कि अथर्ववेद शौनक संहिता के द्रष्टा ऋषि गोपथ हैं। यह ब्राह्मण 'पूर्व गोपथ' और 'उत्तर गोपथ' - इन दो भागों में विभक्त है। पूर्वभाग में पाँच तथा उत्तरभाग में छः - इस प्रकार कुल ग्यारह प्रपाठक हैं। पूर्वभाग के पाँच प्रपाठकों में

Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

135 तथा उत्तर के ६: प्रपाठकों में 123 कण्डिकाएं हैं। सृष्टि प्रक्रिया, ॐकार का महत्त्व, गायत्री की महिमा, ब्रह्मचारी के कर्तव्य, यज्ञ का माहात्म्य – इन सबका वर्णन इस ब्राह्मण ग्रन्थ में विशद रूप में प्राप्त होता है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner